रात्रिक्लास 3.4.68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

बापदादा पूछते हैं राज़ी खुशी बैठे हो? माया बहुत तंग तो नहीं करती है? क्योंकि यह तो समझते हो लड़ाई का मैदान है। कुछ न कुछ तंग करते रहेंगे। किसको कम ,किसको जास्ती। यह भी खेल है। बाप ने यह खेल समझाया है। यह कोई ब्लाइन्डफेथ नहीं है। यहां तो प्रवृत्तिमार्ग है। कल्प–2 यह ईश्वरीय प्रवृत्तिमार्ग होता है। बच्चे भी जानते हैं ऊँच ते ऊँच बाप है। बाप माना ही प्रवृत्तिमार्ग। तुम यर्थात् रीति जानते हो। बाप आये हुये हैं, हमको पढ़ा रहे हैं। सहज राजयोग सिखलाते हैं। बच्चे पहचानते जाते हैं। गाया जाता है फादर शोज़ सन। फादर का परिचय देते रहते हो। तुम बच्चे ही सहज समझते हो। कल्प–2 हम बाप से वर्सा पाते हैं। कल्प–2 ऐसे ही समझते जाते हैं। कोई न समझ कर माया के बन भूल जाते हैं। फिर उस तरफ दुःख देखते हैं तो फिर कोशिश करते हैं सुख तरफ। बाप आये ही हैं सतुयगी सुखधाम के सम्बन्ध में बांधने लिए। बच्चे समझते हैं यह लाइफ अच्छी है। यही जन्म–जन्मांतर, कल्प–कल्पांतर साथ देंगें तो क्यों न जीते–जी बाप से वर्सा ले लूं। होता है वही जो हर कल्प पहले होता है। फिक्र की बात ही नहीं।

है। उनसे वर्सा पाना है। बाप का तो ज़रूर बनेंगे। उनकी याद करते–2 अपने पाप भस्म कर देंगे। मूल बात है यह। यात्रा पर जाते हैं तो तकलीफ भी आती है। वह है अंधश्रद्धा की भक्ति। अभी तो इस पुरानी दुनियां को छोड़ना ही है। ज़रूर कोशिश करते हैं बाप की श्रीमत पर चलें; परन्तु माया चलने नहीं देती है विघ्न डालती है। बाप कहते हैं पुरुषार्थ करो। बाप को याद करो तो खुशी से। घर बैठे भी याद करो। सभी थोड़े ही यहां आ सकते हैं। बाबा ने युक्ति बहुत अच्छी रची है। घर बैठे भी रिफ्रेश हो सकते हैं। याद कर सकते हैं। इस दुनियां रहते हुये जैसे नहीं हैं। वैसे घर में रहते भी जैसे कि नहीं रहते। बेहद के बाप ने बेहद की सौगात लाई है। ड्रामा अनुसार पुरुषार्थ करते हैं। फिक्र की बात ही नहीं। बना बनाया खेल है। हरख शोक की बात ही नहीं। गायन भी है अमर पुरी तो.....यहां कुछ भी होता है अनुभव करते हो अनन्य मर जाते हैं तुम कब रोते नहीं हो। बच्चे रोवेंगे। इसमें भी परीक्षा हो जाती है। ज्ञान में हम रोते नहीं। तुम बच्चों को तो ज्ञान मिल रहा है। अभी कच्चे हैं। आगे चल कर कच्चे पक्के होते जावेंगे। 16कला तो अभी कोई बना न है। बन रहे हैं। वृद्ध अवस्था वाला हो या जवान हो, बुद्धि में ज्ञान, ड्रामा समझ में आ गया तो फिर पक्के हो जाते हैं। वह सदैव हर्षित ही रहेंगे। मुँह से खुशी चमकती रहेगी। जो बोलेंगे मुख से रत्न ही निकालेंगे। तुम भी रूप–बसंत हो। वह भी रूप बसन्त है। ज्ञान की वर्सा बरसाते हो। कोई भी हालत में मीठे बाप को सभी को याद कराना है। जो विदेही है वही देहधारियों को समझाते हैं। संगमयुग की हर एक बात गुह्य होती है। तुम बच्चे ही जानते हो हम निराकारी और साक(ा)री दोनों के बच्चे हैं। और संगम पर ही यह समझाया जाता है। अच्छा, बच्चों को गुडनाइट। नमस्ते।